

औपनिवेशिक संयुक्त प्रान्त में बीसवीं शताब्दी में राजनैतिक सामाजिक चेतना

वकील यादव

शोध छात्र इतिहास

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

भारत में प्रारम्भ में आने वो यूरोपिय व्यापारी एक नई सभ्यता के प्रतिनिधि थे। उनके आर्थिक उद्यम के लक्ष्य और तरीके व्यापारिक संगठन व व्यावसायिक आचरण भारतीयों से बहुत भिन्न थे। वे यूरोपिय राष्ट्रों से आये थे जिनकी राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि भिन्न थी। नैतिकता व रीति-रिवाजों, धर्म तथा संस्कृति और बौद्धिक प्रवृत्तियों और दृष्टिकोण के क्षेत्र में उनमें और भारतीयों में व्यापक विषमता थी। यूरोपिय व्यापारियों और मिशनरियों के आगमन और भारतीयों से उसके सम्पर्क ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को जन्म दिया जो समय के साथ तथा पूर्व और पश्चिम के बीच बढ़ते हुए व्यापार और सम्पर्क के साथ तीव्र होती गई। इस प्रक्रिया में एक नई अवस्था 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा बंगाल विजय के साथ प्रारम्भ हुई। फिर भी भारतीय राजनीतिक, सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव और अधिक गहन तथा व्यापक होता गया।

नए शासकों ने कुछ तो अपने शासन कार्य को सरल बनाने और कुछ उसे सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए अनेक दूरगामी परिवर्तन किये। भारत में कानून और व्यवस्था की स्थापना की गई, संचार व्यवस्था में सुधार हुआ, सड़कों और रेलमार्गों ने सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में जोड़कर आवागमन का मार्ग तैयार किया, संसाधनों के अधिकाधिक दोहन के लिए कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था में सुधार किया गया, भारत के उत्पादक संसाधनों के विकास के लिए उद्योग को प्रारम्भ किया गया एक पूर्णतः नवीन अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली शुरू की गई, व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में नई व्यवस्थाओं से भारतीयों का परिचय हुआ और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए प्रयत्न किये गये।

परिणामस्वरूप जो परिवर्तन प्लासी युद्ध से पूर्व धीमी गति से प्रारम्भ हुए थे, ब्रिटिश राज्य की स्थापना से एक निश्चित दिशा की ओर तेजी से बढ़ने लगे। नए समाज के प्रमुख लक्षण आकार लेने लगे, और भारतीयों के मस्तिष्क में नए विचार और भाव उत्पन्न होने प्रारम्भ हुए। भारत में उपनिवेशवाद ने भारतीय संस्कृति धर्म, शिक्षा रीति-रिवाज आर्थिक सोच तथा सामाजिक ताने-बाने को जड़ से प्रभावित किया। उपनिवेशवाद के प्रभाव को जानने के पूर्व उपनिवेशवाद की मूल भावना तथा उसके अर्थ को समीचीन होगा।

उपनिवेशवाद उस भू-प्रदेश को कहते हैं जो किसी बाहरी या विदेशी राज्य द्वारा शासित है और जिसके अपने निवासियों को अपने शासन में पूरे राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं। आरगेन्सकी के अनुसार— “उन सभी क्षेत्रों को हम उपनिवेश कहेंगे जो एक विदेशी सत्ता द्वारा शासित हैं तथा जिसके निवासियों को पूरे राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

¹ ‘उपनिवेशवाद’ नये उपनिवेशों को अर्जित करने की नीति है यह एक श्रेष्ठ राज्य का अपने से निम्न राज्य के साथ सम्बन्ध है।

हाब्सन के अनुसार— “उपनिवेशवाद अपने श्रेष्ठ स्वरूप में राष्ट्रीयता का स्वाभाविक प्रसार है। और सफल उपनिवेशवाद का मानदण्ड ही यह है कि उपनिवेशवादी राज्य अपनी सभ्यता के मूल्यों को नए प्रदेशों के स्वाभाविक सामाजिक परिवेश में कहाँ तक स्थापित कर सकता है।”

उपनिवेशवाद के सामान्य लक्षण

¹. A.P.K. Organski, World Politics, New York, 1964, p. 223.

². J.A. Hobson, Imperialism- A Study, 1983, page-7.